Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (First Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC-102

Paper Title: Aadhunik Hindi Katha Sahitya Evam Vyakaran

Unit: I

Module Name: बंग महिला द्वारा रचित कहानी 'दुलाईवाली' - भाग 1

Module No: 01

Name of the Presenter: Miss. Radhika Naik

Notes

दुलाईवाली

कथानक

बंग महिला द्वारा रचित कहानी 'दुलाईवाली', सरस्वती पत्रिका में सन् 1907 में प्रकाशित हुई। यह एक हास्य कहानी है। इस कहानी की शुरुवात बनारस की गलियों और वस्तुस्थिति के वर्णन के साथ हुई है। जहां वंशीधर काशी के दशाश्वमेध घाट पर स्नान कर के बड़ी ही तीव्रता से आकर अपनी पत्नी से कहते है कि उन्हें अभी इलाहाबाद जाने के लिए निकलना पड़ेगा। क्योंकि नवलकिशोर की चिट्ठी आयी है। नवलकिशोर और वंशीधर रिश्ते से तो ममेरे भाई हैं परंतु उनकी मित्रता बहुत ज्यादा गहरी है। इसी वजह से वंशीधर की पत्नी जानकी न चाहते हुये भी इलाहाबाद वापस जाने के लिए तैयार हो जाती है। इलाहाबाद जाने के लिए वंशीधर रेल्वे स्टेशन के लिए निकल पड़ते है और जैसे ही वे रेल्वे स्टेशन पहुँचते हैं वे अपने मित्र को यहाँ-वहाँ ढूंढने लगते है। परंतु उनके मित्र नवलकिशोर उन्हे कहीं भी नहीं मिलते और रेलगाड़ी निकल पड़ती है। जब वे अपने डिब्बे में पहुँचते हैं तो वह देखते है कि

उनके डिब्बे में एक स्त्री दुलाई ओढ़े बैठी हुयी है। दुलाई वह चादर है जो नयी दुल्हन अपनी शादी के समय ओढ़े रखती है। वह स्त्री बुरी तरह से रो रही है। वहाँ बैठे लोग अनेक तरह की बातें बनाने लगते है कि शायद उसका पति उसे छोड़ कर चला गया होगा। और तभी वंशीधर दुलाई ओढ़े उस औरत की मदद करने का निर्णय लेता है।

इस सब के बीच वंशीधर रेल के डिब्बे में बैठी एक और स्त्री की ओर देखता है जो अपनी दुलाई में से छिप-छिपकर बार-बार वंशीधर को देख रही थी। वंशीधर को उस स्त्री के आचरण अच्छे नहीं लगते। इलाहाबाद पहुँचकर वंशीधर जब तिकट लेने जाता है तो वापस आकर देखता है कि वह दुलाईवाली स्त्री वहाँ नहीं थी। और वहाँ से वह दूसरी दुलाईवाली स्त्री आती है जिसके आचरण वंशीधर को पसंद नहीं आए थे। वंशीधर को लगता है कि इसी स्त्री ने शायद उस दुलाईवाली स्त्री के साथ कुछ किया होगा। यह सोचकर वह उस स्त्री को डाँटने लगता है। तो वह स्त्री अपनी दुलाई से अपना चेहरा दिखाती है। तो वह देखता है कि वह और कोई न होते हुये उनका मित्र नवलकिशोर ही है। और वह दुलाईवाली जो रेल में रो रही थी वह नवलकिशोर की ही पत्नी है। और इसी प्रकार इस कहानी की समाप्ती होती है।

पात्रों का चरित्र चित्रण

'दुलाईवाली' कहानी के मुख्य पात्र वंशीधर एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में दर्शाए गए हैं जो परोपकारी भी हैं। बिना जान पहचान के वे उस दुलाईवाली स्त्री की मदद के लिए तैयार हो जाते है। इसी के साथ वे तुरंत निर्णय लेने वाले व्यक्ति के रूप में भी दिखाई पड़ते है।

वहीं दूसरी और नवलकिशोर स्वदेशी वस्तुओं के प्रेमी के रूप में दर्शाए गए हैं और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी हम नवलकिशोर को देख सकते हैं जो केवल हँसी मज़ाक करते हैं।